अद्वैत वेदान्त में अनुमान प्रमाण

मो. जसीम राजा*

भारतीय दर्शन की परम्परा में अनुमान प्रमाण का प्रमुख स्थान है। प्रायः सभी भारतीय दार्शनिक इस प्रमाण को मानते है। चार्वाकदर्शन अनुमान प्रमाण नहीं मानता। अनुमान प्रमाण का मूलाधार व्यापि ज्ञान है। चार्वाक ने व्याप्ति का खण्डन करते हुए कहा है कि व्याप्ति के खण्डन से अनुमान की मान्यता भी खण्डित हो जाती है। चार्वाक मतानुसार धूम को देखकर अग्नि का ज्ञान करना, पुनः अग्नि की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना, 'नदी के किनारे फल लगे हुए हैं', इस वाक्य को सुनना, उसके अनन्तर फलप्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होना, ये सब बातें काल्पनिक हैं। मनोराज्य हैं। इनसे किसी तथ्य का निश्चय नहीं किया जा सकता।[1]

व्याप्ति के स्वरूप का निश्चय किसी भी प्रमाण से नहीं हो सकता। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, इन प्रमाणों में, व्याप्ति स्वरूप निर्धारण की योग्यता नहीं है। प्रत्यक्ष के दो प्रकार होते हैं – एक बाह्य प्रत्यक्ष और दूसरा आन्तर प्रत्यक्ष। बाह्य प्रत्यक्ष बाहरी इन्द्रियों से होता है। उससे केवल बाहरी वस्तुओं का ज्ञान होता है। यह केवल वर्तमानकाल विषयक पदार्थों का ज्ञान कराता है। उससे भूतकालिक पदार्थज्ञान एवं भविष्यत् कालिक पदार्थज्ञान नहीं हो सकता। व्याप्तिज्ञान तो सभी कालों एवं सभी अवस्थाओं के पदार्थों का ज्ञान कराता है, अतः बाह्य प्रत्यक्ष के माध्यम से व्याप्ति ज्ञान सम्भव नहीं है।

आन्तर प्रत्यक्ष, आन्तर इन्द्रिय से होता है, आन्तर इन्द्रिय मन है। वह बाह्य इन्द्रियों के अधीन रहता है। बाह्य इन्द्रियाँ जिस विषय को ग्रहण करती है। उसी का प्रभाव मन पर पड़ता है। धूम–अग्नि आदि बाह्य विषयों के प्रति मन की स्वतंत्र प्रवृत्ति नहीं हो सकती। इस विषयों को मन बाहरी इन्द्रियों के माध्यम से जानता है, अतः आन्तर प्रत्यक्ष भी व्याप्ति ग्राहक नहीं हो सकता।[2]

अनुमान प्रमाण के द्वारा भी व्याप्ति का ज्ञान होना असंभव है। अनुमान प्रमाण के लिये स्वयं व्याप्ति ज्ञान को कारण माना गया है और अनुमान द्वारा व्याप्ति की सिद्धि मानी जाय तो अन्योन्याश्रय दोष होगा इस मान्यता से अनवस्था दोष भी होगा, क्योंकि व्याप्ति की सिद्धि अनुमान से और अनुमान की सिद्धि व्याप्ति से पुनः व्याप्ति की सिद्धि अनुमान से, इस प्रकार एक लम्बी परम्परा माननी पड़ेगी, जिसको अनवस्था दोष कहा जाता है, इसलिये अनुमान को व्याप्ति का साधन नहीं माना जा सकता।

शोधछात्र, दर्शनशास्त्र विभाग तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

शब्द–प्रमाण को भी व्याप्ति ज्ञान का कारण नहीं माना जा सकता। शब्द प्रमाण की प्रामाणिकता ही सर्वसम्मत नहीं है। सभी दार्शनिक शब्द को प्रमाण नहीं मानते। वैशेषिकदर्शन शब्दप्रमाण का अन्तर्भाव अनुमान में करता है। इसलिये शब्द–प्रमाण का स्वयं ही खण्डन हो जाता है। ऐसी स्थिति में जबकि शब्दप्रमाण की स्वयं स्वतंत्र सत्ता नहीं है, तो उसके द्वारा व्याप्ति ज्ञान की सिद्धि कैसे मानी जा सकती? यदि यह भी मान लिया जाय कि शब्द प्रमाण का अन्तर्भाव अनुमान में नहीं होता है, तो उसके द्वारा व्याप्ति ज्ञान की सिद्धि कैसे मानी जा सकती है? यदि यह भी मान लिया जाय कि शब्द प्रमाण का अन्तर्भाव अनुमान में नहीं होता है। वह पृथक् प्रमाण है तो भी शब्द प्रमाण के लिये वृद्ध व्यवहार की आवश्यकता पड़ेगी। शब्द–प्रमाण में शक्ति ग्रह की आवश्यकता होती है। शक्ति ग्रह, व्याकरण, उपमान, कोरा, आप्त–वाक्यव्यवहार आदि से होता है। इन शक्ति ग्राहकों का ज्ञान भी अनुमान–प्रमाण से होता है। इस प्रकार पुनः अनवस्था दोष होगा, क्योंकि शब्द–प्रमाण की सिद्धि के लिये अनुमान प्रमाण एवं अनुमान प्रमाण के लिए शब्द प्रमाण आवश्यक है। इससे अन्योन्याश्रयदोष होगा, दोनों की श्रृंखला से अनवस्था दोष होगा। अतः शब्द प्रमाण को भी व्याप्ति ज्ञान का माध्यम नहीं माना जा सकता।[3] अद्वैतवेदान्त अनुमान का एक ही भेद मानता है, वह है अन्वयिरूप।[4] वस्तुस्थिति में ये भेद अनुमान के नहीं अपितु हेतु के हैं। केवलान्वयी हेतु या अनुमान का मानना सही नहीं है। न्यायदर्शन जिस हेतु को केवलान्वयी मानता है, उसकी व्यतिरेक व्याप्ति नहीं होती है। जैसे शब्द अभिधेय है प्रमेय होने के कारण।

यहाँ पर शब्द का अभिधेयत्व साध्य है एवं प्रमेयत्व हेतु है। इस प्रमेयत्व हेतु का व्यतिरेकदृष्टान्त नहीं मिल सकता। इसलिये केवलान्वयी में हेतु का कभी अभाव नहीं होता है। अद्वैत वेदान्त हेतु के इस केवलान्वयी भेद को नहीं मानता। उसके मत से ब्रह्म के अतिरिक्त सभी जागतिक पदार्थों का अत्यन्त अभाव है, इसलिये इस हेतु का मानना अनुपयुक्त है। श्रुति भी 'नेह नानस्ति किंचन' ऐसा कहकर जगत की अनेक विधता का खण्डन करती है, इसीलिये केवल अन्वयीरूप हेतु ही मानना चाहिये।

हेतु का दूसरा भेद केवल व्यतिरेकी है। उसका भी मानना सही नहीं है क्योंकि व्यतिरेकी हेतु से साध्य की सिद्धि नहीं होती है। उसके द्वारा साध्य के अभाव से, साधन के अभाव का निश्चय किया जाता है। जैसे जहाँ अग्नि नहीं है, वहाँ धूम भी नहीं है। यहाँ पर अग्निरू पसाध्य के द्वारा धूम रूप हेतु के अभाव का निश्चय किया गया है।

साध्य के अभाव से हेतु के अभाव की कल्पना का अनुमान में कोई आवश्यक उपयोग नहीं है। अनुमान में तो हेतु से साध्य सिद्धि का उपयोग है। अतः केवल व्यतिरेकी हेतु मानना भी संगत नहीं है। जिसको अन्वय व्याप्ति का ज्ञान नहीं है, वह अर्थापत्ति प्रमाण के द्वारा अग्नि आदि का ज्ञान कर सकता है।

अद्वैत वेदान्त ने अनुमान के दो भेद माने हैं। इन दोनों का स्वरूप लगभग न्याय दर्शन जैसा ही है। परार्थानुमान की प्रक्रिया में कुछ भेद है। न्याय दर्शन परार्थानुमान में पंच्यावयव वाक्यों का प्रयोग करता है जबकि वेदान्त केवल तीन वाक्यों को ही मानता है। उसके मतानुसार प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण या उदाहरण उपनय एवं निगमन, इसमें से कोई भी तीन हो सकते हैं और इन्हीं तीनों से काम चल जायेगा।

चार्वाक के अतिरिक्त प्रायः सभी दार्शनिक अनुमान प्रमाण मानते हैं। चार्वाक व्याप्ति का भी खण्डन करता है। इस व्याप्ति खण्डन की प्रक्रिया का निर्देश प्रमाण निरूपण के अवसर पर किया गया है। चार्वाक अनुमान प्रमाण क्यों नहीं मानता, इसका मूल कारण यह है कि यदि वह अनुमान प्रमाण मान लेगा, तो अनुमान प्रमाण के कारण सिद्धान्त रूप से जिन पदार्थों को मानना पड़ता है, उन सभी को मानना पड़ेगा। अतीन्द्रिय पदार्थों की सिद्धि अनुमान प्रमाण के द्वारा होती है। यदि चार्वाक भी अनुमान प्रमाण मान लेगा तो उसको भी अतीन्द्रिय पदार्थ मानने पड़ेंगे।

बौद्ध दर्शन भी अनुमान प्रमाण मानता है, किन्तु उसका तात्विक विवेचन भिन्न है। बौद्ध अनुमान के द्वारा सामान्य लक्षण का ज्ञान मानते हैं, किन्तु वह भी कल्पित है। अनुमान प्रमाण को न्याय सांख्य मीमांसा, आदि दर्शन भी मानते हैं, किन्तु उनका अनुमान आत्मा, ईश्वर, धर्म, अधर्म, अपूर्व आदि की सिद्धि तक ही सीमित है।

वेदान्त इस प्रसंग में न तो बौद्धों से सहमत हैं और न न्याय आदि से। उसका कहना है कि आत्मा या ईश्वर का ज्ञान अनुमान से नहीं हो सकता। आत्मा या ब्रह्म निर्गुण है। स्वयं सिद्ध है। उसके विषय में व्याप्ति नहीं बन सकती है। इसलिये उसका ज्ञान अनुमान से नहीं हो सकता। जगत कारण के रूप में ईश्वर की सिद्धि अनुमान से नहीं अपितु श्रुति से होती है। 'जन्माद्यस्ययतः' यह ब्रह्मसूत्र का द्वितीय सूत्र इसका प्रतिपादक है। ईश्वर या ब्रह्म का तटस्थ लक्षण इस सूत्र में बताया गया है कि इस तटस्थ लक्षण की सिद्धि भी श्रुति से ही होती है। श्रुति में कहा गया है कि 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति।'[5] जिसके द्वारा समस्त प्रंपच की उत्पत्ति स्थिति एवं भंग होता है, वही ब्रह्म है।

इस प्रकार जगत् जन्मादि का कारण ब्रह्म है, यहाँ पर यह शंका हो सकती है कि सांख्य आदि दर्शन प्रकृति, परमाणु आदि को जगत का कारण मानते हैं। वेदान्त ब्रह्म को जगत् कारण मानता है। इसका क्या आधार हो सकता है? वेदान्त ने इसके उत्तर के रूप में 'शास्त्रयोनित्वात्' इस तीसरे सूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की है। इस सूत्र की दो प्रकार की व्याख्यायें हैं। पहली व्याख्या है : शास्त्रं योनिः प्रमाणं यस्मिन्, तस्याभावः शास्त्रयोनित्वं तस्मात् शास्त्रयोनित्वात्। इसका अभिप्राय यह है कि ब्रह्म ही जगत् का कारण है और उस ब्रह्म की सिद्धि शास्त्र अर्थात् वेद से होती है। ब्रह्म शास्त्र प्रमाणक है, शास्त्र अर्थात् वेद में जगत् के कारण रूप में ब्रह्म का निरूपण किया है। इसलिये ब्रह्म जगत् का कारण है।

प्रथम व्याख्या में योनि शब्द का अर्थ प्रमाण है तथा द्वितीय व्याख्या में योनि शब्द का अर्थ कारण है। इसका अभिप्राय है शास्त्रस्य योनिः, शास्त्र योनिः तस्यभावः शास्त्रयोनित्वं तस्मात् शास्त्रयोनित्वात्, अर्थात् ब्रह्मशास्त्र का कारण है। इस प्रकार ब्रह्म या ईश्वर की सिद्धि अनुमान से नहीं बल्कि श्रुति प्रमाण से होती है। जहाँ–जहाँ व्याप्ति बनती है, वहाँ–वहाँ अनुमान प्रमाण के द्वारा ज्ञान हो सकता है, किन्तु जहाँ व्याप्ति नहीं बनती उसका ज्ञान अनुमान के द्वारा नहीं हो सकता। निर्गुण ब्रह्म के विषय में किसी प्रकार की व्याप्ति नहीं बनती, इसलिये उसका ज्ञान अनुमानप्रमाण के द्वारा नहीं हो सकता। यद्यपि अनुमान के द्वारा ब्रह्म का ज्ञान नहीं होता है, तथापि अनुमान का वेदान्त सिद्धान्त में तात्विक महत्व है। उसके मत से अनुमान के द्वारा स्वतंत्र विधि से चाहे ब्रह्म का ज्ञान भले ही न हो फिर भी अनुमान ब्रह्मज्ञान का सहायक अवश्य है।

श्रुति सम्मत अनुमान से या श्रुतिसमर्थक अनुमान से ब्रह्म ज्ञान की पुष्टि होती है, अनुमान स्वतंत्र रूप से ब्रह्मज्ञान का कारण नहीं बन सकता। जगत् प्रपंच का कारण सांख्य दर्शन की त्रिगुणात्मिका प्रकृति नहीं तथा न्याय का परमाणु भी जगत प्रपंच का कारण नहीं, इत्यादि विकल्पों का खण्डन, श्रुतिमूलक अनुमान से की गयी है। इसके अलावा श्रुतियों का समन्वय अद्वैत सिद्धान्त में किस प्रकार होता है और किस प्रकार परस्परविरोधिनी श्रुतियों के तात्पर्य का अवधारण किया जायेगा? आदि प्रसंगों से भी, श्रुतिमूलक अनुमान सहायक होता है। इस प्रकार तत्व की अवधारणा के विषय में यद्यपि अनुमान साक्षात् सहायक नहीं है, फिर भी परोक्षरूप से उसकी सहायता महत्वपूर्ण है। व्यावहारिक क्षेत्र में अनुमान की तत्वावधारण विषयक सहायता वेदान्त को अवश्य मान्य है।

इस प्रकार वेदान्त बौद्धिक अनुमान को परमतत्व के विषय में समर्थ न मानते हुये भी, इसका सर्वथा तिरस्कार नहीं करता है। बल्कि उसकी सीमा निर्धारित कर देता है, अन्य दार्शनिक ऐसा नहीं करते। जगत् का मिथ्यात्व, अज्ञान का अस्तित्व एवं जीव–ब्रह्म का ऐक्य भी, श्रुति समर्थित अनुमान के माध्यम से ही सिद्ध प्रतीत होता है।

सन्दर्भः

1 सर्वदर्शन संग्रह, पृ. 10.

2 सर्वदर्शन संग्रह, पृ. 13.

3 सर्वदर्शन संग्रह, पृ. 14.

4 तच्च अनुमानं अन्वयिरूपम् एकमेव। नतु केवलान्वयि। सर्वस्यापि धर्मस्य अस्मन्मते ब्रह्मनिष्ठ अत्यन्ताभावप्रतियोगित्वेन अत्यन्ताभावप्रतियोगिसाध्यकत्व–रूपकेवलान्वयित्वस्य असिद्धेः।–वेदान्त परिभाषा अनुमान परिच्छेद.

5 तैत्तिरीयोपनिषद्, 3.1.